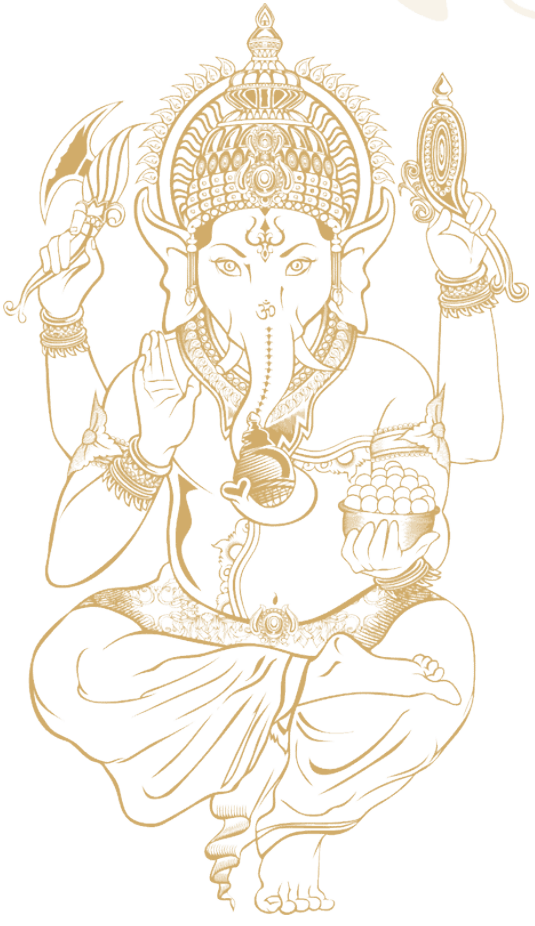

Akash singh solanki

Thakur bhavani

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119807103

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
16/05/1995	जन्म तिथि	03/07/2003
मंगलवार	दिन	गुरुवार
घंटे 13:27:00	जन्म समय	19:25:00 घंटे
घटी 19:16:14	जन्म समय(घटी)	34:07:05 घटी
India	देश	India
Hyderabad	स्थान	Hyderabad
17:22:00 उत्तर	अक्षांश	17:22:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व	रेखांश	78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16	स्थानिक संस्कार	-00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:44:30	सूर्योदय	05:46:09
18:41:00	सूर्यास्त	18:54:28
23:47:41	चित्रपक्षीय अयनांश	23:54:08

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
बुध 10वर्ष 2मा 20दि	18:16:18	सिंह	लग्न	धनु	25:35:16	केतु 5वर्ष 7मा 22दि
शुक्र	01:12:21	वृष	सूर्य	मिथु	17:20:11	शुक्र
05/08/2012	21:58:57	वृश्चि	चंद्र	सिंह	02:34:43	24/02/2009
05/08/2032	02:09:40	सिंह	मंगल	कुंभ	12:07:41	24/02/2029
शुक्र 05/12/2015	21:58:50	वृष	बुध	मिथु	15:04:27	शुक्र 25/06/2012
सूर्य 04/12/2016	18:42:44	वृश्चि व	गुरु	कर्क	24:32:10	सूर्य 25/06/2013
चन्द्र 05/08/2018	05:25:37	मेष	शुक्र	मिथु	04:41:05	चन्द्र 24/02/2015
मंगल 05/10/2019	28:52:44	कुंभ	शनि	मिथु	09:54:41	मंगल 25/04/2016
राहु 05/10/2022	11:44:26	तुला व	राहु व	वृष	04:43:36	राहु 26/04/2019
गुरु 05/06/2025	11:44:26	मेष व	केतु व	वृश्चि	04:43:36	गुरु 25/12/2021
शनि 05/08/2028	06:37:47	मक व	हर्ष व	कुंभ	08:38:54	शनि 24/02/2025
बुध 05/06/2031	01:39:55	मक व	नेप व	मक	18:42:02	बुध 25/12/2027
केतु 05/08/2032	05:33:16	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	24:05:29	केतु 24/02/2029

लग्न-चलित

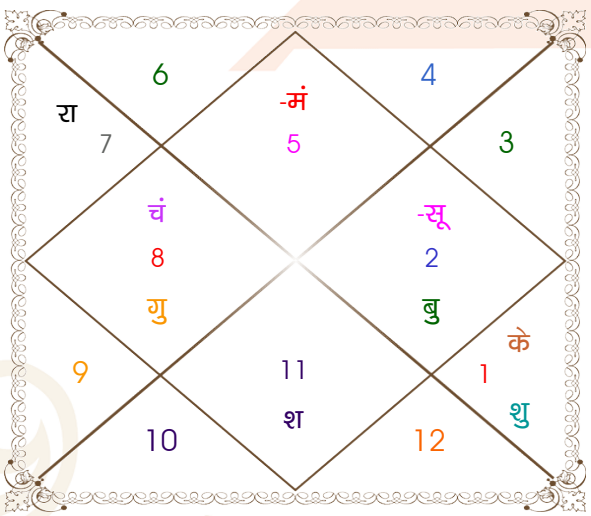

लग्न-चलित

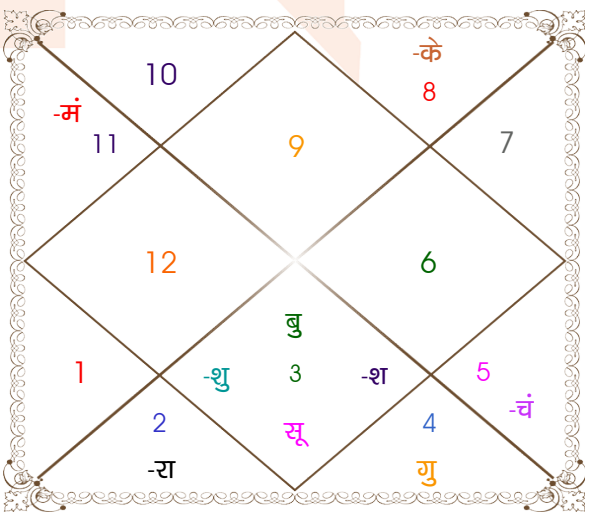

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मृग	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	32.00		

ोि`पदही`वसंदाप का वर्ग मृग है तथा जींनत ईींअंदप का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ोि`पदही`वसंदाप और जींनत ईींअंदप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

ोि`पदही`वसंदाप मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

जींनत ईींअंदप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु जींनत ईींअंदप कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ोि`पदही`वसंदाप तथा जींनत ईींअंदप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।